Vol 5 Issue 4 Oct 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | Oct - 2015

सुषम बेदी का 'हवन': प्रवासी समाज के संघर्ष का संपुटन

किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

सारांश

आज साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रवासी हिन्दी साहित्य एक चेतना है, मनोविज्ञान है, अर्न्तदृष्टि है। प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में परिवेश को ग्रहण करता है। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विषमताएं आती हैं जिसके कारण नवीन संस्कार, नूतन दृष्टिकोण, नए विचार, नई सोच बनने लगती हैं। भारतीय प्रवासी लेखक के सामने रंगभेद की समस्या, अतीत के प्रति मोह, सांस्कृतिक संकट, पीढ़ीगत अंतर, बेगानापन, नारी की दशा आदि के अलावा अनेक और समस्याएं भी सामने आ रही हैं। सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में एक जानी पहचानी लेखिका हैं। उनका साहित्य पश्चिमी जगत के प्रवासी भारतीयों के अनुभव, परिस्थितियों, अन्तर्द्वन्द्वों को अभिव्यक्त करता है। सुषम बेदी का 'हवन' उपन्यास अमेरिका में प्रवासियों की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण करने वाला उपन्यास हैजिसमें दर्शाया गया है कि प्रवासी विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक–दमक से अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं। इस उपन्यास की नायिका गुड्डो के जीवन में संघर्ष, असुरक्षा का भय,अतीत के प्रति मोह,अक्खरता अंग्रेजी का हिन्दुस्तानीपन,अलगाव, सफेद खून,अकेलापन, बेगानगी आदिभटकन, निराशा, उदासी व तनाव को उत्पन्न करते हैं।गुड्डो की पुत्र घुटन का शिकार, बेटियां परिवार के टूटने पर निराशा में संत्रस्त हो जाती हैं। पश्चिमी समाज में जीवन यापन एक जुआ है जिसमें भारतीयों को नौकरी, शिक्षा,भाषा व परिवार संबंधी समस्याओं का सामना करता है। इस उपन्यास की राधिका नस्लवाद के कारण हीन–भावना की शिकार है, आधुनिकता जब उसे ठोकर मारती है तो अपनी गलती का एहसास होता है।अन्त में उसकी दुखद गाथा बलात्कार का शिकार हो जाती है।सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन' निश्चय ही अपनी समस्त अस्मिता को गँवाकर अगली पीढ़ी के लिए होम करती हुई पूरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है जिसमें प्रत्यक्ष रूप में प्रवासियों के संघर्ष का संपुटन मिलता है।

बीज शब्दः– नस्लवाद,घुटन,प्रवासी संवेदन,अलगाव,बेगानगी,सुषम बेदी।

प्रस्तावना

मूल प्रतिपादनः–मनुष्यने अपने बौद्धिक विकास द्वारा प्रकृति से संघर्ष करके स्वयं को पशु–पक्षियों से भिन्न करके अपना समाज सृजित कर लिया। इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। समाज और मनुष्य का गूढ़ संबंध है क्योंकि समाज ही मनुष्य को जंगली जीवन से मुक्त करवाता है। मनुष्य को समाज में रहने के लिए सामाजिक संबंध स्थापित करने पडते हैं जिस कारण उसे सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में परिवर्तन और संकट एक सिक्के के दो पहलू हैं। मनुष्य पूँजीवादी देशों की आर्थिक मजबूती और पदार्थक खुशहाली के कारण प्रवास की ओर आकर्षित हुए।[1]विदेशी सभ्यता की चमक–दमक से आकर्षित होकर उल्लास व आनंद की प्राप्त्याशा में जीवन को होम कर रहे हैं।

आज हजारों–लाखों भारतीय प्रवास की प्रक्रिया को अपना रहे हैं।यदि हम प्रवासी समाज के भीतर झाँककर देखें तो प्रत्येक प्रवासी समस्याओं से जूझ रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात प्रवास ईमीग्रेशन के रूप में इतना बढ़ा कि विकसित देशों में एक स्थान से लोग दूसरे स्थान पर बस गए। पश्चिमी देशों को सदैव मानसिक और शारीरिक श्रम की आवश्यकता रही है।[2] यूरोप में प्रवास कम होने के बाद ऐशियाई लोगों के प्रवास के लिए इन देशों को अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पड़ा। इन्होंने मानवीय बहु–संस्कृति और ऐथनिकवाद को मान्यता दी जिसके फलस्वरूप प्रवासी समुदाय का एक सामाजिक अस्तित्व सामने आया।वास्तव में वासी वे हैं जो पीढ़ियों से संबंधित धरती पर वास कर रहे हैं। अप्रवासी वह व्यक्ति है जो निश्चित समय के लिए अपना देश छोड़कर बेगाने देश में रहता है और फिर लौट आता है। प्रवासी वे लोग हैं जो अपना देश छोड़कर बेगाने देश अनिश्चित समय के लिए जाते हैं, पर दूसरे देश में बस जाने का फैसला कर लेते हैं। प्रवासी की स्थिति अनिश्चित होती है क्योंकि वह वापिस लौटने का फैसला भी कर सकता है। जब प्रवासी वापिस न जाने का फैसला कर लेता है तो वह प्रवासी न होकर वासी होता है । विदेशों में स्थायी तौर पर बस जाने वाले प्रवासी को कहा जाता है ।''[3]

'प्रवास' शब्द का अर्थ है : विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर ना रहना । किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर रहने वाला प्रवासी है जो रोजी–रोटी, सुरक्षा, नवीन अवसरों की तलाश में, आर्थिक साधनों को प्राप्त करने के लिए और अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए वहीं स्थापित हो जाता है। प्रवासी मनुष्य का भ्रमण भटकन ही है और भटकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानसिकता को संतुलित कर एक साँचे में ढलने से रोकती है। उसका घर, उसका वर्तमान, उसका भविष्य सब अनिश्चित होते हैं। अस्थिरता की यह प्रवृत्ति उसकी मानसिकता को भी अस्थिर बना देती है और इस मानसिकता का समाजीकृत रूप अस्थिरता का अहसास भोगता है।[4] उपर्युक्त अर्थों और व्याख्याओं और धारणाओं के पश्चात उस व्यक्ति को प्रवासी कहा जा सकता है जो बेगाने देश में स्थायी या अस्थायी रूप से बस जाने वाला होता है।अस्थिरता स्थिरता प्रवासी मनुष्य की चेतना का बुनियादी लक्षण माना जा सकता है । बेगानी धरती पर रहने वाले मनुष्य की मनोदशा ऐसी होती है कि वह अलगाव की स्थिति का शिकार होता है। हर प्रवासी की जिन्दगी और इच्छाएं दूसरे प्रवासी से भिन्न हैं और सभी की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और उम्र संबंधी पृष्ठभूमि अलग–अलग है।[5]प्राचीन काल मे फकीर, संन्यासी और जिज्ञासु की ज्ञान प्राप्ति के लिएविदेश प्रवासियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है।'

प्रवासी साहित्यकार अपने अनुभव साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। वे संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वयवादी प्रवृतियों को प्रोत्साहन देते है।प्रवासी साहित्य में अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम, विश्व की समस्याएं, संस्कृति, आचार–विचार, आधुनिक दौड़ और मानसिक द्वन्द्व का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। अमेरिका, नीदरलैंड, डेनमार्क, कीनिया, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, स्वीडन, जिंबाबवे, डुबई, मसकट, थाईलैंड आदि देशों में वासित भारतीयों ने भी प्रवासी चेतना के स्वर को अभिव्यक्त किया है। प्रवासी हिन्दी साहित्यएक चेतना है, एक मनोविज्ञान है, एक अर्न्तदृष्टि है। प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में परिवेश को ग्रहण करता है।[6]परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विषमताएं आती हैं जिसके कारण नवीन संस्कार, नूतन दृष्टिकोण, नए विचार, नई सोच बनने लगती हैं। प्रवासी मनुष्य की विषमताओं और संघर्ष को देखकर प्रवासी हिन्दी लेखक के ह्रदय में दर्द उमड़ता है और वही दर्द कागज पर उतर कर सभी का दर्द बन जाता है।

आज साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रवासी साहित्य सृजन का आधार पारिवारिक, सामाजिकऔर सांस्कृतिक तनाव में से उत्पन्न खोखलेपन की अभिव्यक्ति है।विदेशों में रह रहे भारतीयों केलिए नस्ली भेदभाव की स्थिति ने मानसिक स्तर पर हीनता का प्रभाव उत्पन्न किया है।प्रवासी भारतीय शारीरिक रूप में विदेशों में रहताहुआ भी आत्मिक स्तर पर स्वयं को अपनी धरती से तोड़ नहीं सका जिस कारण मूल धरती की स्थिति को चित्रित कियागया है।[7]प्रवासी नारी की द्वन्द्वपूर्ण मानसिक स्थितिसम्पूर्ण भारतीय प्रवासी जिन्दगी की चिन्ता का कारण बनती जा रही है।भारतीय प्रवासी लेखक के सामने रंगभेद की समस्या, अतीत के प्रति मोह,सांस्कृतिक संकट, पीढ़ीगत अंतर, बेगानापन, नारी की दशा आदि के अलावा अनेक औरसमस्याएं भी सामने आ रही हैं।

सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में एक जानी पहचानी लेखिका हैं। सुषम बेदीका जन्म जुलाई 1945 में फिरोजपुर, पंजाब में हुआ था।बाल्यावस्था से ही सुषम बेदी के मन में बड़ी–बड़ी कल्पनायें अंगड़ाईयाँ लेती थीं। वह अपनी दिनचर्या में मग्न रहती थीं और जीवन के एक–एक पल को जिंदादिली से जीती थीं। मन की अस्पष्ट भावनाओं को प्रकट करने के अपरिपक्व प्रयास भी किये।दसवीं कक्षा तक पहुंचते–2 उनके मन में उपन्यास तैयार हो गया,उन्हें डर भी लगता था कि कहीं उनकी खिल्ली न उड़ाई जाय,तब उन्हें ख्याल भी न था कि भविष्य में सचमुच लेखिका बनने का सपना पूर्ण होगा।उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''बस यही इंतजार कि कब बड़े होंगे, कब अपने पैरों पर खड़े होंगे और यूँ ही अकेले निकल पड़ेंगे दुनिया के अनजाने फैलाव में। पर हर दिन वही लंबा सा दिन चढ़ निकलता। स्कूल, स्कूल से घर और फिर सीधे मैदान में या सहेलियों के घर निकल जाना।''[8] सुषम जी को हिन्दी व संस्कृत के अतिरिक्त पंजाबी,अंग्रेज़ी, फ्रैंच,उर्दू भाषाओं का धाराप्रवाह ज्ञान है। वे 1985 से कोलम्बिया विश्वविद्यालय,न्यूयार्क में हिन्दी भाषा व साहित्य पढ़ा रही हैं तथा साथ हीन्यूयार्क यूनिवर्सिटी और सिटी यूनिवर्सिटी में विज़िटिंग प्रोफेसर हैं।उन्होंने लिखा है कि साहित्य जीवन को खोलता है, उसे समझने में सहायक होता है, यही मेरी सर्जना का धर्म है। उनके जीवन में परम्परा और परिवर्तन का विशेष महत्व रहा है। उनका साहित्य पश्चिमी जगत के प्रवासी भारतीयों के अनुभव,परिस्थितियों, अन्तर्द्वन्द्वों को अभिव्यक्त करता है। अब तक पुरुषों को केन्द्र में रखकर समाज के कार्यकलापों ,संस्थाओं का संगठन हुआ है लेकिन आवश्यकता है कि औरत को समाज की अनिवार्य इकाई मानकर समाज की चर्चा हो,स्त्री का स्वास्थ्य समस्यानुशीलन के केन्द्र में हो ताकि स्त्री का महत्व कायम हो सके।[9]डॉ प्रीत अरोड़ा जी से सुषम बेदी की बातचीत के दौरान उनके लेखन से सम्बन्धित तथ्य उजागर हुए तथा उन्होंने कहा कि मेरा संदेश बस यही है कि लेखन तभी करो अगर लेखन के बिना जीना अर्थहीन लगे–धन या नाम के लिए नहीं। प्रतिबद्ध होकर लेखन के प्रति ईमानदारी रहो, जल्दबाज़ी में लिखा दूर तक नहीं जाता। जो लिखा है, उसका आकलन खुद करो। अगर लगे कि तुमने अपना श्रेष्ठतम दिया है तो उसे छपने के लिए भेजो। लिखने से डरने की जरूरत नहीं ,इस बात का ध्यान रखो कि क्या न लिखा जाये,लेखन में चुनाव की बहुत अहमियत होती है।[10]यूनिवर्सिटी में पढ़ाने का पद भी मिला इस तरह शौक और काम दोनों का मकसद एक हो गया। At a time when Hindi is struggling for identity at home, the USA is all set to standardise the teaching of India's national language in its academic institutions. The purpose is to streamline the instruction of this important South Asian language, which has seen a surge in the numbers of learners in the recent past. Heading the project is Susham Bedi, a Punjab-born professor and founder head of the department of Hindi at Columbia University, now heading the US committee for standardising Hindi.[11]

लेखन से जुड़े रहना उनका अपना चुनाव रहा और अन्दरूनी जरूरत भी। उन्होंने कहा भी है –'मेरे सुखदतम् क्षण वही होते हैं जबकि लिख रही होती हूं।'[12]लेखिका,कवयित्री,अभिनेत्री, शिक्षाविद् के रूप में सुषम बेदी जी ने हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान दिया तथा उन्हें अनेक देशी व विदेशी साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।उन्होंने विदेश में महसूस कियाकि प्रवासियों ने परम्परागत मूल्यों और विश्वासों के बदलाव कोझेला, विरोध किया और अंत में उन्हें स्वीकार कर समझौता कर लिया,यही उनके साहित्य का मूल मंत्र है।[13]विदेशों में बसे भारतीयों की द्वन्द्वमय मनः स्थितियों को अभिव्यक्त करने में सुषम बेदी का हिन्दी साहित्य को विशेष योगदान है।

इनकेआज तक सात उपन्यास–'हवन', 'लौटना', 'इतर,' 'गाथा अमरबेल की', 'नवाभूम की रस कथा','कतरा–दर–कतरा', 'मोरचे' और एक कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' भी प्रकाशित हो चुका' है। हवन' उपन्यास साहित्यिक पत्रिका 'गंगा' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशितहोने के बाद 1989 में 'पराग प्रकाशन' से प्रकाशित हुआ । 1992 में 'हवन' का अनुवाद उर्दू में(हवन) पाकिस्तान से और अंग्रेजी अनुवाद 'The Fire Sacrifice' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसकी अंग्रेजी में 6,000प्रतियाँ Niha A.Susham Bedi is an Indian writer now living in the USA. ? Everything that was tender, fragrant, fresh and pure... All turned to ashes... Had she herself been saved or burned to nothing, like the offerings in the fire?? As Guddo?s family gathers in her New York apartment to welcome the new year, she re-lives the ten years that have passed since she left her native India. Drawn to the USA by the promise of a glamorous life, Guddo?s whole family become ensnared in a struggle between Indian and American ways of life. She watches as the next generation is drawn inevitable into rootless Western ways, with tragic results. A fast-moving novel which encapsulates the conflicts of the immigrant to the West, through the eyes of a woman coming to terms with loss and challenge.[13].

सुषम बेदी का 'हवन' उपन्यास अमेरिका में प्रवासियों की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण करने वाला उपन्यास हैजिसमें प्रवासीविदेशीसभ्यता की भौतिक चमक–दमक से अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं।इस उपन्यास की नायिका गुड्डो है। उसकी बहन पिंकी उससे पहले न्यूयार्क मेंवास कर रही है। गुड्डो भारत में अपने परिवार सहित खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही थी परन्तुपति की मृत्यु के बाद जिन्दगी में उथल–पुथल मच जाती है। बहन पिंकी के जरिए वह विदेशचली जाती है ।वह अपनी दोनों बेटियों तनिमा और अणिमा को पढ़ाई के लिए हॉस्टल छोड़अपने बेटे राजू के साथ अमेरिका पहुँच जाती है। बस वहीं से शुरू होता है गुड्डो का संघर्षमयजीवन।गुडडो पिंकी के परिवार के साथ समायोजन नहीं बिठा पाती। इसीलिए बह बहनका घर छोड़ कर छोटे से अपार्टमेंट में चली जाती है। भारत में पला–बढ़ा राजू विदेशी में अकेलेपन का शिकार होता चला गया।गुड्डो को अच्छी नौकरी के लिए बहुत ठोकरें खानी पड़ीं। शुरू में गुड्डो सेल्जगर्लका काम करती है। उसे बहुत दौड़–धूप के बाद अकाउटिंग क्लर्क की नौकरी मिलजाती है।गुड्डो की बेटी अणिमाछुट्टियाँ बिताने अमेरिका आई व वहाँ की चमक–दमक, शिक्षासंस्थानों औरलोगों के खुलेपन से प्रभावित होती है। अणिमा और तनिमा दोनों का विवाहभारत के डॉक्टर लड़कों से होता है परन्तु वे भी अमेरिका आ जाते हैं। सारापरिवार जब अमेरिका रहने लगता है तब रिश्तों की खींचातानी प्रारम्भ होतीहै। दोनों के पति विदेशी रंगरलियों में खो जाते हैं और अंत में तनिमा अनुज का रिश्तासमाप्त हो जाता है।इस उपन्यास में मिस्टर बत्रा जोकि विदेश में प्रवास कर रही गुड्डोको जरिया बनाकर वहाँ पहुँचना चाहते हैं। इसमें डॉ. जुनेजा जैसे विदेश में नए आए लोगों की मदद तो करते हैं परन्तु साथ ही सब वसूल भी लेते हैं।राधिका जैसी दोहरी संस्कृति की शिकार लड़की की दुखद गाथा भी है जो विदेशी चमक–दमक मेंखोकर अंत में बलात्कार का शिकार हो जाती है।

भारतीय पश्चिमी समाज की चकाचौंध से आकर्षित होता है किन्तु उस के पीछे का परिश्रम वहीं जाकर दिखाई देता है। भारतीय लोग विदेश पहुँचते पर अल्प–शिक्षा और अंग्रेजी के अल्प–ज्ञान के कारण ऊँची नौकरियाँ प्राप्त नहीं कर पाते। 'हवन' उपन्यास की नायिका गुड्डो एक संघर्षशील जीवन व्यतीत कर रही है तथा अपने बहन और जीजा जी के जीवनयापन को ब्यान करती है कि 'विलेज में ही फुटपाथ पर लगता था बाजार। फुटपाथ पर बेचते हुए जीजा जी के मन को ऐसी चोट लगती कि आँखों में आँसू आने लगते। कोई हिन्दुस्तानी उन्हें देख लेता तो उनका मन होता कि जमीन के अन्दर कहीं जाकर छिप जाएं।'[14]

पिंकी के जान–पहचान के एक हिन्दुस्तानी ने अंडरग्राऊंड ट्रेन स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक अखबार–मैगजीन, सिगरेट और कैंडी आदि बेचने का स्टॉल लगाया था तथा उसे एक सेल्सपर्सन की जरूरत थी। गुड्डो को यह काम उचित लगा–''स्टॉल सुबह से लेकर रात बारह–एक बजे तक खुला रहता था। मन विरोध तो कर रहा था कि अखबार बेचने का काम इतने बड़े अफसर की बीवी करेगी ... पर हाथ में धेला तक तो था नहीं। शहर में आने–जाने का किराया तक तो वह पिंकी से लेती थी । गुड्डो ने शुरू कर दिया काम।''[15]

'असुरक्षा' शब्द सदियों से मनुष्य के साथ जुड़ा आ रहा है चाहे शिक्षित हो चाहे अशिक्षित। आश्चर्य की बात है कि विवेच्य उपन्यास में गुडड्ो असुरक्षा के भय से त्रस्त रहती है क्योंकि उसने वहाँ की गुंडागर्दी को अपनी आँखों से देखा है–'ट्रेन अभी–अभी गुजरी थी...फिर से वही डरावना सन्नाटा छा गया था। कुछ हरकत–सी हुई तो गुड्डो ने खिड़की की ओर आँखें उठायीं...खिड़की पर बढ़े हाथ में पिस्तौल ठीक गुड्डो की ओर तनी थी। गुड्डो ने देखा एक लम्बा–सा आदमी। कानों में इतने ही क्रूर और जानलेवा शब्द पड़े, ''पुॅट ऑल युअर मनी इन द विंडो।''[16] गुडड्ो का जिस्म दिमाग एकदम सुन्नहो गया। घबराहट में उसने दराज खोली और जो कुछ भी था, खिड़की पर निकालकर रख दिया। उसे पता नहीं लगा कि उसके साथ कितना बड़ा हादसा हो गया।

विदेश में वास कर रहे भारतीयों के लिए यह चोरी, गुंडागर्दी देखना रोज की बात है। जब गुड्डो ने अपनी बहन पिंकी को सारे हादसे के बारे में बताया तो उसे सांत्वना देने की बजाय कहती है, ''भैन जी, यहाँ तो आए दिन ऐसे चोरी–डाके होते रहते है...जान वान चली जाए तब तो तहकीकात करते हैं ———जितने पैसे रहते हैं, उससे ज्यादा तो वकीलों के लग जाएंगे। बस, अब यह सब छोड़ो और कोई ढंग की नौकरी खोजो।''[17]विदेशों में स्त्री की असुरक्षा दिनों दिन बढ़ती जा रही है और वे देर रात बाहर निकलने से डरती हैं।

विदेश में निम्न स्तर की नौकरियों में असुरक्षा की भावना है। गड्डो को अपनी प्लेटफार्म की नौकरी में बहुत ठंड सहनी पड़ती है। बाथरूम जाने के लिए घंटों रोके रखती खुद को –उसे सबवे के बाथरूम में जाते डर लगता था । यूँ डर तो बाहर भी लगता था । ट्रेन गुजर जाने के बाद जब एकदम सन्नाटा छा जाता तो बहुत घबरा जाती गुड्डो। पटेल तो यही कहता– ''काम करना है तो करो वर्ना रास्ता नापो, यहाँ कौन सी कमी है भाड़े के नौकरों की।'[18]

गुड्डो को नौकरी के लिए बहुत ठोकरें खानी पड़ीं। उसे अंग्रेजी का हिन्दुस्तानीपन भी अखरता है। भाषा का दोगलापन मन को

कचोटता क्योंकि उसे दूसरों की नकल करनी पड़ रही है। गुड्डो ने आर्य समाज स्कूलों में शिक्षा ग्रहण की पर उसने अंग्रेजी में एम.ए. की थी। उसका भाषा ज्ञान, शब्द–क्षमता कई अमरीकियों से भी बेहतर था। इंसट्रक्टर के बताने पर गुड्डो अमरीकी तरीके से बोलने का अभ्यास करने लगी। अमरीकी हाव–भाव और कंधे उचकाकर जवाब–सवाल करती पर खीझ जाती और कंधे गिराकर कहती– ''टू हैल विद इट'' अनायास सहपाठियों से पाया था पिंकी के अमरीकी एक्सेंट का गुड्डो मजाक बनाया करती थी अब खुद को यही करना पड़ रहा था। राजू के लिए अभ्यास खासा मंनोरंजक होता। राजू पढ़ा भी अंग्रेजी स्कूल में था। उसे उच्चारणों के अंतर पकड़ने में देर नहीं लगी। वह ममी से मजाक भी कर देता, ममी, यह 'शिडयूल' क्या होता है, 'स्कैडयूल' कहो न!''[19]

गुड्डो के साथ एक अमरीकी आदमी नौकरी के दौरानहिंदी में बात करता है ,मातृभाषा सुनकर वह उछल पड़ती है।बातचीत करते–करते दोनों में एक नाता सा बन गया। बूढ़ा उसके स्टाल पर हाल–चाल पूछने रुक जाता पर एक दिन गुड्डो से उसने कहा, ''तुम इतना सुंदर है, पढ़ा है,तुमको यह काम शोभा नहीं देता।''[20] लेखिका ने 'हवन' उपन्यास के माध्यम से भाषा की समस्या को भली भाँति प्रस्तुत किया है। इस समस्या से प्रत्येक प्रवासी भारतीय उलझा हुआ है। नौकरी, शिक्षा, परिवार में भी भाषा संबंधी समस्याओं का सामना करता है। .

प्रवासी भारतीय अपनी इच्छा और शिक्षा के अनुसार नौकरी न मिलने के कारण निराशा और तनाव का शिकार हो जाते हैं। इस उपन्यास में भारत के पारम्परिक माहौल से विदेश गई गुड्डो को इस समस्या का सामना करना पड़ा–'एकाउंटिंग कोर्स के आखिरी महीने में ही गुड्डोगुड्डो पहले घबराई। दोनों बेटियाँ ब्याहनी हैं,लोग क्या कहेंगे? बाल कटवाकर उपहासास्पद भी तो लग सकती है। बहुत पशोपेश के बाद एक दिन उसने हेयर ड्रेसर से अपॉयंटमेंट ले लिया। कंधे तक कटे बाल सैट करवाकर गुड्डो को अपना चेहरा खुद भी अच्छा लगा था। क्लास में सभी सहपाठियों से उसे बधाई के शब्द मिले तो मन का आत्म–विश्वास बढ़ा।''[21]

भारत से ऊँची शिक्षा हासिल करके युवक–युवतियाँ विदेश जाने पर सपने पूरे करने के लिए भागदौड़ करते हैं। बिना वर्क परमिट के जब काम नहीं मिलता तो डॉक्टर–इंजीनियर तक वेटर की नौकरी करते देखे जा सकते हैं। अरूण अपनी कहानी जब राजू और गुड्डो को सुनाता है तो उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं–''दीवाली थी न, कपड़े तो बढ़िया पहनने ही थे। मैं इंजीनियरिंग खत्म करके यहाँ तीन महीने के लिए ही आया था विजिटर वीसा पर। जिस रिश्तेदार के यहाँ टिका था उनकी सिफारिश पर एक हिन्दुस्तानी रेस्तरां में वेटर की नौकरी मिल गई। पैसे भी मिलते थे और खाना रेस्तरां में मुफ्त हो जाता था।एक दिन इमिग्रेशन वालों ने रेस्तरां पर छापा मारा और हम सब पकड़कर जेलों में डाल दिये गये।''[22]

पश्चिमी समाज में जीवन यापन एक जुआ है अगर सही पड़ा तो सपने पूरे हो गए और उल्टा तो फिर से सपने देखने शुरू करो। हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिभा, ज्ञान और अनुभव को लेकर आता है और खुद को नीलामी परचढ़ा देता है –''अच्छा दाम लग जाए तो क्या खूब... बढ़िया सी नौकरी, सुंदर–सा घर,नमकीन–सी बीवी और ब्लॉड गर्लफ्रैंड सबका सौदा हो जाता है। न बढ़िया दाम लगे तो भी बैरे या दुकानदार की नौकरी ही सही । ले–देकर किसी को यह घाटे का सौदा नहीं लगता।''[23]

गुड्डो को अपने बेटे राजू के साथ गीता के परिवार में ही रहना पड़ता है। वह विदेश में रिश्तों के सफेद होते खून का यथार्थ रूप देखती है। उसने रिश्तों की दरियादिली देखी थी लेकिन तब उसके सामने अतीत का वह दृश्य घूम जाता है। गुडड्ो के पति की जब मौत हुई थी और वह तभी–तभी खरीदे पलंगों का जोड़ा बेचना चाहती थी तो इन्हीं जीजा जी ने झट पांच सौ रू. निकालकर कहा था, ''यह लो पलंग मत बेचना, यह तो प्रेम जी की निशानी हैं।''[24]

गुड्डो के बेटी अणिमा का विवाह भारत में होता है। गुड्डो को बेटी के विवाह की खुशी तो है परन्तु छोटे घर में संयुक्त परिवार बसाने की चिंता है–''बहुत जल्दी ही सपनों के जाल को असलियत के चूहे कुतरने लगते। राकेश के पास यहाँ पहुँचते ही नौकरी नहीं होगी। मालूम नहीं, कितने दिन लग जाएं। अणिमा की स्कालरशिप इतनी नहीं की अलग कमरा लेकर रह सके। अनुज और अणिमा भी तो आ रहे है। तनिमा को अगले साल रैजीडैंसी मिलेगी, तब तक कैसे रहेंगे सब लोग इस छोटे से अपार्टमैंट में।''[25]

गुड्डो के अपार्टमैंट में बेटियाँ और जवाई आ जाने से राजू को अपने ही घर में घुटन महसूस होने लगी थी–''पर छोटे से उस अपार्टमैंट में छह व्यस्कों की रिहाईश ने अजीब हलचल मचा दी थी। ऊपर से नये–नये नाजुक रिश्ते। राजू की जिंदगी की झील में जैसे तूफान आ गया। जब उसे कमरा खाली कर बैठक में सोने को कहा गया तो उसे ऐसा लगा की उसके निजी जगत् में दखल अंदाजी की जा रही है।''[26]राजू का कमरा उसकी बहन और जीजा जी को दे दिया जाता है। राजू को ड्राइंगरूम में सोना और पढ़ना पड़ता है। ये सब जब उससे सहन न हुआ तो माँ से कहने लगा, ''मम्मी मैं पढूंगा कैसे? मुझे तो यहाँ लगातार डिस्टर्बेंस होगी। क्या मैं अपने कमरे में नहीं टिका रह सकता?''[27]

भारतीयों की पहली पीढ़ी तो परम्परागत भोजन का ही सेवन करती है परन्तु दूसरी पीढ़ी का स्वाद भोजन को लेकर परिवर्तित हो चुका है। गुड्डो का बेटा राजू विदेशी भोजन की ओर बेहद आकर्षित है। भारतीय भोजन उसे स्वाद रहित लगता है। वह अपनी माँ से कहता है, ''ममी, पिंकी मौसी अर्जुन के लिए तो चीज डैनिश गर्म कर रही है और मुझे कहती है कि अभी खाना तैयार हुआ जाता है, मुझे नहीं खानी वह दाल–सब्जी। कहती है कि अर्जुन तो हिन्दुस्तानी खाना खाता नहीं, यहीं पला है से उसे तो बाहर की ऐसी चीजें देनी पड़ती है हम सब तो प्रापर खाना खायेंगे, मुझे नहीं खाना प्रापर खाना!''[28]

विदेश में कुछ प्रवासी भारतीय तो निम्न स्तर की नौकरियों में ही उलझकर रह जाते हैं किन्तु कुछ भारतीय अपनी लगन और परिश्रम से उच्च स्तरीय नौकरियों तक पहुँच ही जाते है। इसके लिए एक तो वह भारत से उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं और विदेश पहुँचकर अपनी काबलियत के बल पर अच्छी नौकरी प्राप्त करते हैं।डॉ. जुनेजा तनिमा को उसकी नौकरी मिलने की खुशखबरी सुनाते है, ''अभी मुझे शायद कहना नहीं चाहिए। तुम्हारी रेजीडेंसी तो बस पक्की है इसी अस्पताल में । तुम अगले साल से शुरू कर सकती हो काम।''[29]

आज की ज्वलंत समस्या है विदेश पहुँचने के लिए प्रवासी भारतीय लड़की का सहारा लेना। लड़के को भारत से केवल ईमीग्रेट ही नहीं करवाया जाता बल्कि उसके लिए एक उच्च स्तर की नौकरी भी ढूँढी जाती है। गुड्डो भी इसी कशमकश से जूझ रही है–'दूसरा निष्कर्ष था–जवाईयों को ग्रीनकार्ड दिलवाना। उनको घर पर रखकर नौकरी का इंतजाम करना लड़कीवालों की जिम्मेदारी उसूलन नहीं होती। उनको इस बात का शुक्रगुजार होना चाहिए कि ऐसी खुशकिस्मत है कि लड़कियाँ मिली हैं जो न केवल पढ़ी–लिखी हैं, देखने में अच्छी हैं।

अमरीका आने का मौका मिल रहा है यह क्या कम है ? ''[30]

विदेशी समाज में बच्चे अकसर माता–पिता के लाख समझाने पर भी नहीं समझते व माता–पिता की आजादी का वे गलत लाभ उठाते हैं। किन्तु जब आधुनिकता उन्हें ठोकर मारती है तो इन्हें अपनी गलती का एहसास होता है। राधिका जब भागते–भागते थक चुकी तो तनाव और निराशा उसे घेर लिया था। पिता की बीमारी का आरोप उस पर लगने से भीतर तक टूट जाती है– ''राधिका के अंतर्मन को जैसे किसी ने छीलकर रख दिया हो। क्यों करते हैं उसके माँ, भाई–बहन उससे इतनी नफरत! क्या जो कुछ हुआ, जान–बूझकर किया उसने? पापा के स्ट्रोक ने क्या राधिका को चोट नहीं पहुँचाई? पर हो सकता है सच में पापा को मेरी वजह से ही...राधिका को लगा सारे संसार ने उसे रिजेक्ट कर दिया है। कहाँ जाए वह? डेनी के लिए भी वह नॉन–एग्जिस्टेंट हो चुकी है।''[31]राधिका के लिए सहेलियों की अहमियत अधिक होने से उसके लिए माता–पिता का काम तो केवल उन्हें हिदायतें देना और रीति रिवाज लादना है।'

प्रत्येक प्रवासी भारतीय को नस्लवाद की नीति को भोगना पड़ता है।पश्चिमी समाज में विदेशियों और भारतीयों में प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है क्योंकि उनके लिए नौकरी के अवसर कम हो रहे हैं,इसी कारण भेद–भाव बढ़ता जा रहा है। इस उपन्यास में अणिमा को इसी भेदभाव की नीति का शिकार होना पडता है और नौकरी पाने के सारे संघर्ष की कहानी अपनी सहेली नजमा को सुनाती है ''इस कॉलेज की नौकरी के लिए भी इंटरव्यू से पहले सब इसी तरह का शक मन में डाल रहे थे – ऐशियाई महिला और अंग्रेजी पढ़ाए अमरीकनों को। पर मेरे क्रेडेशियल सबसे बढ़िया थे। इनका खेल इन्हीं के पत्तों से खेलों, तब मिलती है सफलता।''[32]

नस्लवाद का व्यापक रूप शिक्षा के क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। स्कूलों और कॉलेजों में भारतीय बच्चे अपनी तीव्र बुद्धि के बल पर विशेष स्थान प्राप्त कर लेते हैं। विदेशों में नस्ली भेदभाव का प्रत्यक्ष रूप स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों आदि में विद्रोह ओर विरोध की प्रवृति जागृत हो रही है। इस उपन्यास की अणिमा कहती है, ''अब वह साठवें दशक वाला अमीरी और सत्ता विद्रोही युवकों का युग खत्म हो चुका था। गरीबी, बेरोजगारी और प्रवासियों की भरमार ने यहाँ के सचेत युवक को बड़ा कंजरवेटिव बना दिया था। दिन पर दिन लगातार नये प्रवासियों के आगमन ने कहीं कहीं इस युवा वर्ग को अमेरिका की इस प्रवासी स्वागत नीति के खिलाफ भी कर दिया था।''[33] प्रवासी भारतीयों को अपनी शिक्षा के कारण नस्लवाद का शिकार होना पड़ता है।

इस उपन्यास की राधिका नस्लवाद के कारण हीन–भावना की शिकार है तथा अपनी सहेलियों को अपना नाम लोरा बताया है। वह अपनी मां को मिसेज जोनसन नाम से संबोधित करती है और टूटी–फूटी हिन्दी में समझाने लगी, ''ममी, वह तो मजाक में मैंने अपना नाम इन्हें लोरा जॉनसन बतला दिया था, करें क्या आपके हिन्दुस्तानी नाम किसी की समझ में नहीं आते। मुझे सब बुलाते थे–रै...डि...खा इट इज सो फनी, इजंट इट!''[34]

बेगानगी मनुष्य की मानसिकता का अटूट भाग है जो परिस्थितियों की अनुकूलता–प्रतिकूलता के आधार पर उत्पन्न होती है। पुराने विश्वासों के टूटने और नवीन विश्वासों के स्थापित होने के बीच की मानसिक अवस्था का नाम बेगानगी है जो भटकन, निराशा पैदा करती है। विदेश में सभी का घर से बाहर जाकर काम करना आर्थिक आवश्यकता है,परन्तु स्त्री पुरुष की समानता की भावना प्रवासी भारतीय परिवारों की टूटन का कारण बन रही है क्योंकि विकसित परिवेश में भी पुरूषों की मानसिकता परिवर्तित नहीं हुई।अणिमा का पति राकेश भी ऐसी मानसिकता का शिकार है–' यह चाहते हो कि घर बैठी तुम्हारे पैर दबाती रहूँ या पकवान बनाती रहूँ तो वह तौर–तरीका मेरे लिए नहीं है।'[35]आधुनिक काल में पति–पत्नी में बेगानापन इस कदर बढ़ चुका है कि दोनों एक–दूसरे की जिंदगी में दखल बर्दाश्त नहीं करते।

लेखिका ने बेगानेपन की प्रवृति में धार्मिक भिन्नता को भी स्पष्ट किया है। हमारी धार्मिक प्रवृति हमें अंग्रेजों से अलग करती है। भारतीय धर्म को पश्चिमी समाज अजनबी दृष्टि से देखता है। धार्मिक नस्लवाद को भोगती कड़वाहट को व्यक्त करती अणिमा कहती है, ''आप हरे राम, हरे कृष्ण का धोती–टीका लगा लीजिए या योगतंत्र की धूनी रमाइए तो खूब वाहवाही होगी। हमारी गरीबी, हमारी भुखमरी, हमारे धार्मिक कर्मकांड हमारे मंदिर और हमारे अजंता–एलोरा अदभुत खिलौने हैं इनके लिए। जब खेल कर ऊब जाते हैं तो किसी ओर देश की संस्कृति आकर्षित कर लेती है– चीनी, जापानी या जावा और सुमात्रा की पर हमारी मानवता से कोई ताल्लुक नहीं है।''[36]

सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में जानी पहचानी लेखिका हैं परन्तु कवयित्री,अभिनेत्री, शिक्षाविद् के रूप में हिन्दी साहित्य में भी अमूल्य योगदान दिया है। विदेशों में बसे भारतीयों की द्वन्द्वमय मनः स्थितियों को अभिव्यक्त करने में उनका विशेष योगदान है।विवेच्य उपन्यास 'हवन' के अन्तर्गत अमेरिका में बसे प्रवासियों की जिन्दगी का यथार्थ रूपांकन है जोआनंद की प्राप्त्याशा में विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक–दमक से अपने जीवन को होम कर रहे हैं। उपन्यास की नायिका गुड्डोसंघर्षशील जीवन यापित करते हुए असुरक्षा के भय से भासित रहती है व उसे अंग्रेजी का हिन्दुस्तानीपन भी अक्खरता है।भारतीयों को नौकरी, शिक्षा,भाषाव परिवार संबंधी समस्याओं का सामना करता है जिस के कारण वे निराशा और तनाव का शिकार हो जाते हैं। पश्चिमी समाज में जीवन यापन एक जुआ है। गुड्डो के अपार्टमैंट में बेटियाँ और जवाई आ जाने से राजू को अपने ही घर में घुटन महसूस होने लगी।गुड्डो की बेटियां परिवार टूटन का शिकार होने पर अकेलेपन से भासित होती हैं।पश्चिमी समाज में प्रवासियों की बढ़ती गिनती के कारण विदेशियों और भारतीयों में प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है।बेगानगी मानसिक अवस्था का नाम है जो भटकन, निराशा और उदासी पैदा करती है। लेखिका ने बेगानेपन की प्रवृति में धार्मिक भिन्नता को भी स्पष्ट किया है। सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन' निश्चय ही अपनी समस्त अस्मिता को गँवाकर अगली पीढ़ी के लिए होम करती हुई पूरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है जिसमें प्रत्यक्ष रूप में प्रवासियों के संघर्ष का संपुटन मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 .Dubey, Ajay. Indian diaspora: Global Identity. New Delhi KalingaPublication 2003

2. Rukmani, T.S. Hindu Diaspora: Global perspectives (Ed.) New Delhi.Munsilal Manohar lal publishars 2001

3.अंजना संधीर,प्रवासी आवाज,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

4.अरविंद मोहन, प्रवासी भारतीयों की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1998।
5.नासिरा शर्मा,अपनी विरासत से दूर।
6.मृदुला सिंहा,अमेरिका में बसे भारतीयों की कसक और कमाल, गगनांचल।
7.सुषमबेदी, अप्रवासी हिंदी लेखन और अस्मिता का सवाल, हंस, जनवरी 1996।
8.सुषमबेदी, अप्रकाशित आत्मकथा।
9. रोहिणी अग्रवाल, अमेरिकावासी भारतीय लेखिकाओं का कथा संसार, अन्यथा।
10 .अलका प्रदीप दीक्षित, प्रवासी हिंदी लेखक, उ.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन, कानपुर।
11. www.tribuneindia.com/2007/20071122/chd.htmgou_
12. http://www.pravasiduniya.com/literature
13. www.pravasiduniya.com/tag/susham-bedi
14.सुषम बेदी, हवन,अभिरूचि प्रकाशन, शाहदरा,दिल्ली,1996, पृ 14।
15. वही, पृष्ठ 16।
16. वही ,पृष्ठ 47–48।
17 .वही; पृष्ठ 19।
18 .वही, पृष्ठ 48
19. वही, पृष्ठ 51।
20. वही ,पृष्ठ 52।
21. वही,पृष्ठ 17।
22 .वही, पृष्ठ 41।
23. वही,पृष्ठ 83।
24. वही,पृष्ठ 98।
25 .वही,पृष्ठ 99।
26 .वही, पृष्ठ 14।
27. वही, पृष्ठ 111।
28. वही, पृष्ठ 97।
29 .वही, पृष्ठ 76।
30. वही, पृष्ठ 114।
31 .वही, पृष्ठ 83।
32. वही,पृष्ठ 70।
33 .वही, पृष्ठ 65।
34 .वही, पृष्ठ 55।
35 .वही, पृष्ठ 81।
36. वही, पृष्ठ 85।

Net Sources

1 .https://en.wikipedia.org/wiki/Susham_Bedi
2 .https://www.linkedin.com/pub/susham-bedi/66/8a7/966
3 .www.columbia.edu/~sb12/
4 .rivr.sulekha.com/susham-bedi_141688_followers_activity https://plus
5 .https://plus.google.com/100432588021709258375
6 .www.hindisamay.com/lekhak/Susham%20Bedi.htm
7 .www.outlookindia.com/article/amrika-in-a-hindi-accent/231972
8 .www.encyclo.co.uk/meaning-of-Susham%20Bedi
9 .no.cyclopaedia.net/wiki/Susham_Bedi
10 .www.bokkilden.no/SamboWeb/produkt.d
11 .www.bharatdarshan.co.nz/.../japan-hindi-conference.h..
12. www.sahityakunj.net/LEKHAK/S/SushamBedi/SushamBedi_main.htm.
13.वर्तमान साहित्य, प्रवासी साहित्य महाविशेषांक, मई, (2006)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org